

संस्कृत ई-कंटेंट

पाठ्यांशः प्रमुख नाटककारों का परिचय - भास, अश्वघोष एवं भवभूति

कक्षा: बी.ए. तृतीय सेमेस्टर

विषय: संस्कृत

प्रश्न पत्र का नाम: संस्कृत नाटक एवं व्याकरण

पेपर कोड: A020301T

ई-कंटेंट निर्मात्री - सपना साहू

अधिगम उद्देश्य -

इस ई-कंटेंट के अध्ययन के उपरान्त विद्यार्थी:

- * संस्कृत नाट्य साहित्य के आधारस्तंभ-महाकवि भास, अश्वघोष तथा भवभूति के जीवन, काल एवं उनकी प्रमुख नाट्य रचनाओं से गहराई से परिचित हो सकेंगे।
- * इन तीनों नाटककारों की नाट्य-शैली, संवाद-सौंदर्य, पात्र-चित्रण एवं रस-विधान की बारीकियों का विश्लेषणात्मक अध्ययन कर सकेंगे।
- * 'प्रतिमानाटकम्', 'स्वप्नवासवदत्तम्', 'शारिपुत्रप्रकरणम्', 'उत्तररामचरितम्' तथा 'मालतीमाधवम्' जैसी कालजयी रचनाओं के साहित्यिक सौंदर्य और नाट्य-शिल्प का मूल्यांकन कर सकेंगे।
- * संस्कृत साहित्य में दृश्य-काव्य के क्रमिक विकास और नाट्य-सिद्धांतों के व्यावहारिक प्रयोग को समझ सकेंगे।

प्रस्तावना

संस्कृत साहित्य में दृश्य-काव्य (नाटक) को काव्य की सबसे समृद्ध और आनंददायी विधा माना गया है। प्राचीन आचार्यों ने कहा भी है— “काव्येषु नाटकं रम्यम्”। संस्कृत नाट्य परंपरा अत्यधिक प्राचीन एवं वैज्ञानिक रही है।

इस परंपरा को पल्लवित और समृद्ध करने में महाकवि भास, बौद्ध दार्शनिक अश्वघोष और करुण रस के निष्णात आचार्य भवभूति का योगदान अतुलनीय है। जहाँ भास ने अपने त्वरित एवं जीवंत रंगमंचीय नाटकों से नाट्य-कला की नींव रखी, वहीं अश्वघोष ने नाटक को दर्शन और धर्म-प्रचार का सुंदर माध्यम बनाया। इसके पश्चात् भवभूति ने अपनी प्रौढ़ शैली और गभीर रसानुभूति से संस्कृत नाटक को पराकाष्ठा पर पहुँचाया।

प्रमुख नाटककारों का विस्तृत परिचय

महाकवि भास

महाकवि भास संस्कृत साहित्य के प्रथम उपलब्ध एवं सर्वाधिक प्राचीन नाटककार माने जाते हैं। महाकवि कालिदास ने भी अपने नाटक ‘मालविकाग्निमित्रम्’ में “प्रथितयशसां भासकविसौमिल्लककविपुत्रादीनां प्रबन्धानतिक्रम्य...” कहकर भास का अत्यंत आदरपूर्वक स्मरण किया है। बाणभट्ट ने भी अपनी कृति ‘हर्षचरितम्’ में भास के नाटकों की विशेषताओं (सूत्रधार-कृत प्रारंभ, बहु-पात्र योजना) की प्रशंसा की है।

समय एवं जीवन-वृत्त

* समय / काल: ईसा पूर्व चौथी शताब्दी से ईसा की द्वितीय शताब्दी के मध्य (विद्वानों के अनुसार लगभग 300 ई.पू. से 200 ई.)। वे कालिदास से पूर्ववर्ती हैं।

* जीवन: भास के व्यक्तिगत जीवन के विषय में प्रामाणिक जानकारी का अभाव है। वे संभवतः दक्षिण भारत अथवा उज्जैनी से संबद्ध थे और वैष्णव मतानुयायी थे।

प्रमुख कृतियाँ (भासनाटकचक्रम्)

वर्ष 1912 में महामहोपाध्याय पंडित टी. गणपति शास्त्री ने त्रिवेन्द्रम् (अनंतशयनम्) से ताड़पत्रों पर मलयालम लिपि में लिखित भास के 13 नाटकों की खोज की, जिन्हें 'भासनाटकचक्रम्' कहा जाता है। इन्हें विषय-वस्तु के आधार पर वर्गीकृत किया जा सकता है:

*** रामायण पर आधारित (2 नाटक):**

* प्रतिमानाटकम् (7 अंक) - राम के वनगमन से लेकर रावण-वध और राम-राज्याभिषेक तक की कथा। इसमें 'प्रतिमा गृह' (पितरों की मूर्तियों का घर) की मौलिक कल्पना है।

* अभिषेकनाटकम् (6 अंक) - किष्किंधा कांड से राम के राज्याभिषेक तक की कथा।

*** महाभारत एवं भागवत पर आधारित (7 नाटक):**

* मध्यमव्यायोगः - भीम और घटोत्कच के मिलन की एकांकी कथा।

* दूतवाक्यम् - श्रीकृष्ण का कौरव सभा में दूत बनकर जाना।

* दूतघटोत्कचम् - अभिमन्यु-वध के बाद घटोत्कच का धृतराष्ट्र के पास जाना।

* कर्णभारम् - दानवीर कर्ण द्वारा इंद्र को कवच-कुंडल दान देने की कथा।

* ऊरुभंगम् - भीम द्वारा दुर्योधन की जंघा भंग करने का वर्णन। यह संस्कृत का एकमात्र प्रसिद्ध दुःखांत (Tragic) नाटक माना जाता है।

* पंचरात्रम् - द्रोणाचार्य के कहने पर दुर्योधन द्वारा पांडवों को आधा राज्य देने की शर्त की कथा।

* बालचरितम् - भगवान श्रीकृष्ण के बाल-चरित्र एवं कंस-वध का वर्णन।

* उदयन कथा पर आधारित (2 नाटक):

* प्रतिज्ञायौगंधरायणम् (4 अंक) - राजनीति-प्रधान नाटक, जिसमें मंत्री यौगंधरायण द्वारा राजा उदयन को बंदीगृह से छुड़ाने की प्रतिज्ञा का वर्णन है।

* स्वप्नवासवदत्तम् (6 अंक) - भास का सर्वश्रेष्ठ एवं कालजयी नाटक। इसमें उदयन और वासवदत्ता के निष्काम प्रेम तथा राजनीति का अद्भुत संगम है।

* लोककथा / कल्पना पर आधारित (2 नाटक):

* अविमारकम् (6 अंक) - राजकुमार अविमारक और राजकुमारी कुरंगी की प्रणय कथा।

* चारुदत्तम् (4 अंक - अपूर्ण) - दरिद्र ब्राह्मण चारुदत्त और गणिका वसंतसेना की कथा (जो बाद में शूद्रक के 'मृच्छकटिकम्' का आधार बनी)।

नाट्य-शैली एवं विशेषताएँ

* रंगमंचीयता (Stageability): भास के नाटक अभिनय की दृष्टि से अत्यंत व्यावहारिक और संक्षिप्त हैं।

* संक्षिप्त प्रस्तावना: इनके नाटकों में नान्दीपाठ के तुरंत बाद सूत्रधार का प्रवेश होता है जिसे 'स्थापना' कहा जाता है।

* पात्र-चित्रण एवं मौलिकता: भास ने पौराणिक पात्रों को भी नवीन और सहृदय रूप में प्रस्तुत किया है (जैसे-दुर्योधन और कैकेयी का सहृदय चित्रण)।

* भाषा एवं शैली: इनकी भाषा सरल, प्रांजल, वैदर्भी रीति से युक्त और आडंबरहीन है।

महाकवि अश्वघोष

महाकवि अश्वघोष संस्कृत साहित्य के प्रथम प्रामाणिक एवं ऐतिहासिक महाकवि तथा नाटककार हैं। वे महान बौद्ध दार्शनिक, धर्म-प्रचारक और संगीताचार्य थे।

समय एवं जीवन-वृत्त

* समय / काल: ईसा की प्रथम शताब्दी का उत्तरार्ध एवं द्वितीय शताब्दी का प्रारंभ (लगभग 78 ई. से 120 ई.)।

* जीवन: वे कुषाण सम्राट कनिष्क प्रथम के समकालीन एवं उनके आध्यात्मिक सलाहकार (गुरु) थे। वे चतुर्थ बौद्ध संगीति के उपाध्यक्ष भी रहे। वे अयोध्या (साकेत) के निवासी थे और उनकी माता का नाम सुवर्णाक्षी था।

प्रमुख कृतियाँ

* शारिपुत्रप्रकरणम् (नाट्य ग्रन्थ):

यह संस्कृत साहित्य का प्रथम प्रामाणिक रूपक/प्रकरण ग्रन्थ है। इसमें 9 अंक हैं। इसका कथानक भगवान बुद्ध द्वारा अपने दो प्रमुख शिष्यों—शारिपुत्र और मौद्गल्यायन को बौद्ध धर्म में दीक्षित करने की घटना पर आधारित है।

* महाकाव्य: बुद्धचरितम् (28 सर्ग) एवं सौन्दरनन्दम् (18 सर्ग)।

नाट्य-शैली एवं विशेषताएँ

- * धर्म और दर्शन का नाट्य रूपांतरण: अश्वघोष के नाटकों का मुख्य उद्देश्य बौद्ध दर्शन, शांति और अहिंसा का प्रचार करना था।
- * शांतरस की प्रधानता: संस्कृत नाट्यशास्त्र में नाट्य में शांतरस को लेकर मतभेद थे, किंतु अश्वघोष ने अपने नाटकों में शांतरस को मुख्य रस के रूप में स्थापित किया।
- * प्राकृत भाषा का प्रामाणिक प्रयोग: इनके नाटकों में प्रयुक्त प्राकृत भाषाएँ (मागधी, अर्धमागधी, शौरसेनी) भाषाशास्त्र की दृष्टि से अत्यंत प्राचीन और प्रामाणिक मानी जाती हैं।
- * शैली: इनकी शैली वैदर्भी रीति से युक्त, सरल, मधुर तथा आलंकारिक प्रभाव से परिपूर्ण है।

महाकवि भवभूति

महाकवि भवभूति संस्कृत नाट्य साहित्य में करुण रस के सर्वोच्च आचार्य माने जाते हैं। नाट्य-कला की दृष्टि से उन्हें महाकवि कालिदास के समकक्ष स्थान प्राप्त है।

समय एवं जीवन-वृत्त

- * समय / काल: आठवीं शताब्दी का पूर्वार्ध (लगभग 700 - 750 ई.)।
- * जीवन: भवभूति दक्षिण भारत के 'पद्मपुर' नामक स्थान के निवासी थे। ये काश्यप गोत्रीय ब्राह्मण थे। इनके पिता का नाम नीलकंठ और माता का नाम

जतुकर्णी था। इनके गुरु का नाम ज्ञाननिधि (तथा कुमारिल भट्ट) माना जाता है।
ये कान्यकुब्ज (कन्नौज) के राजा यशोवर्मा के सभापंडित थे।

प्रमुख कृतियाँ (तीन रूपक)

भवभूति ने केवल तीन रूपकों की रचना की है और तीनों ही नाट्य साहित्य की अमूल्य निधि हैं:

- महावीरचरितम् (7 अंक):

यह राम-कथा पर आधारित नाटक है। इसमें श्रीराम के प्रारंभिक जीवन, सीता-स्वयंवर से लेकर रावण-वध और अयोध्या लौटने तक की कथा का वर्णन है। इसमें वीर रस की प्रधानता है।

- मालतीमाधवम् (10 अंक - प्रकरण):

यह 10 अंकों का काल्पनिक प्रकरण ग्रन्थ है। इसमें नायक माधव और नायिका मालती की प्रणय कथा का सरस एवं रोमांचक वर्णन है। इसमें शृंगार, अद्भूत और बीभत्स रसों का सुंदर सम्मिश्रण है।

- उत्तररामचरितम् (7 अंक - नाटक):

यह भवभूति की अक्षय कीर्ति का आधार एवं संस्कृत नाट्य साहित्य का मुकुटमणि है। इसमें रामायण के 'उत्तरकांड' की कथा (सीता-परित्याग, लव-कुश का जन्म, राम-सीता का पुनर्मिलन) वर्णित है। इसमें करुण रस की प्रधानता है।

नाट्य-शैली एवं विशेषताएँ

* करुण रस के निष्णात: भवभूति करुण रस के निष्णात कवि हैं।

उत्तररामचरितम् में उन्होंने करुण रस को ही समस्त रसों का मूल माना है—

> “एको रसः करुण एव निमित्तभेदाद् भिन्नः पृथक् पृथगिव आश्रयते विवर्तान्।”

* प्रौढ़ एवं गंभीर भाषा: भवभूति की भाषा में ओज, तत्सम शब्दों की बहुलता और भावानुकूल छंद-योजना है। वे ‘शिखरिणी’ छंद के सिद्धहस्त कवि माने जाते हैं (“भवभूतेः शिखरिणी निर्गलतरंगिणी”)।

* प्रकृति का सजीव चित्रण: भवभूति ने दंडकारण्य, पंचवटी और प्रकृति के विकराल व सुंदर दोनों रूपों का सजीव चित्रण किया है।

* विदूषक-रहित नाटक: भवभूति के तीनों नाटकों में विदूषक (हास्य-पात्र) का पूर्णतः अभाव है, जो उनके नाटकों की गंभीरता को बनाए रखता है।

अभ्यास प्रश्न

बहुविकल्पीय प्रश्न

* ‘भासनाटकचक्रम्’ की खोज किस विद्वान ने की थी?

(क) डॉ. बलदेव उपाध्याय

(ख) महामहोपाध्याय टी. गणपति शास्त्री

(ग) ए. बी. कीथ

(घ) आचार्य रामचंद्र शुक्ल

उत्तर: (ख) महामहोपाध्याय टी. गणपति शास्त्री

* संस्कृत का कौन-सा नाटक ‘दुखांत’ (Tragic) श्रेणी में आता है?

(क) प्रतिमानाटकम्

(ख) ऊरुभंगम्

(ग) उत्तररामचरितम्

(घ) शारिपुत्रप्रकरणम्

उत्तर: (ख) ऊरुभंगम्

* 'शारिपुत्रप्रकरणम्' किस महान नाटककार की रचना है?

(क) भास

(ख) भवभूति

(ग) अश्वघोष

(घ) कालिदास

उत्तर: (ग) अश्वघोष

* "एको रसः करुण एव" यह प्रसिद्ध उक्ति भवभूति के किस नाटक से उद्धृत है?

(क) महावीरचरितम्

(ख) मालतीमाधवम्

(ग) उत्तररामचरितम्

(घ) स्वप्नवासवदत्तम्

उत्तर: (ग) उत्तररामचरितम्

* महाकवि भवभूति किस राजा के सभापंडित थे?

(क) सम्राट हर्षवर्धन

(ख) राजा यशोवर्मा

(ग) सम्राट कनिष्क

(घ) चंद्रगुप्त विक्रमादित्य

उत्तर: (ख) राजा यशोवर्मा

लघु उत्तरीय प्रश्न

* महाकवि भास के रामायण पर आधारित दोनों नाटकों के नाम एवं अंक-संख्या लिखिए।

* अश्वघोष के जीवन-काल एवं उनकी राजनीतिक पृष्ठभूमि का संक्षेप में परिचय दीजिए।

* महाकवि भवभूति के नाटकों की दो प्रमुख विशेषताएँ लिखिए।

* 'प्रतिमानाटकम्' का नाम 'प्रतिमा' क्यों पड़ा? संक्षेप में समझाइए।

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

* भास की नाट्य-कला, रंगमंचीयता एवं 'भासनाटकचक्रम्' की प्रमुख विशेषताओं पर एक विस्तृत निबंध लिखिए।

* उत्तररामचरितम् के आधार पर महाकवि भवभूति की करुण रस योजना एवं नाट्य-शैली की समीक्षा कीजिए।

4. संदर्भ ग्रन्थ

- * डॉ. बलदेव उपाध्याय - संस्कृत साहित्य का इतिहास, शारदा निकेतन, वाराणसी।
- * डॉ. कपिलदेव द्विवेदी - संस्कृत साहित्य का इतिहास, रामनारायणलाल बेनीप्रसाद, प्रयागराज।
- * ए. बी. कीथ - A History of Sanskrit Literature, मोतीलाल बनारसीदास।
- * वाचस्पति गैरोला - संस्कृत साहित्य का इतिहास।